फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य

संदर्भ और प्रकृति

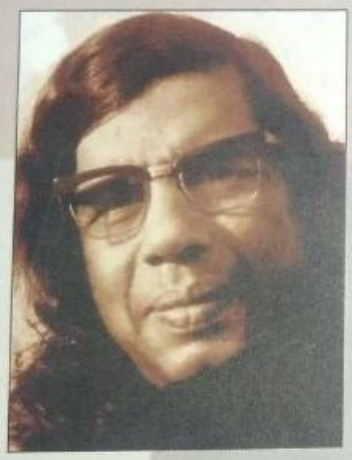

संपादक मंडल

डॉ. सतीश यादव

डॉ. संतोष कुलकर्णी

डॉ. रणजीत जाधव

डॉ. हणमंत पवार

ISBN : 978-93-85647-03-1

प्रथम संस्करण : 2022

© लातूर जिला हिंदी साहित्य परिषद्, लातूर

मूल्य : ₹ 1495/-

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक या लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलैक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्लिखित प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

प्रकाशक : यश पब्लिकेशंस
1/10753, सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा
दिल्ली-110 032 (भारत)

विक्रय कार्यालय
2/9, अंसारी रोड,
दरियागंज, नई दिल्ली-110 002

संपर्क : 9599483887
ई-मेल : info@yashpublications.co.in
वेबसाइट : www.yashpublications.co.in

डिस्ट्रीब्यूटर : यश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि.
Available at : amazon.in, flipkart.com

लेज़र टाइपसेटिंग : जी.आर.एस. ग्राफिक्स, दिल्ली

मुद्रक : नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली

61. 'तीसरी कसम' कहानी की कहानी कला 352
प्रा. डॉ संजय गड़पायले

62. 'तीसरी कसम' का कथानायक हिरामन 357
डॉ. बी. आर. गायकवाड

(क) गद्यकार फणीश्वरनाथ रेणु

63. 'ऋणजल धनजल': एक सफल रिपोर्ताज 362
प्रो. डॉ. रमेश संभाजी कुरे

(ड) समग्र रेणु : रेणु की समग्रता

64. आँचलिकता का अतिक्रमण करते आदि विमर्शकार फणीश्वरनाथ रेणु 368
प्रो. भारती गोरे

65. प्रतिबद्धता के लेखक : फणीश्वरनाथ रेणु 378
प्रो. सुधाकर शेंडगे

66. फणीश्वरनाथ रेणु और नागार्जुन के उपन्यासों में अंत : संबंध 384
डॉ. लुटे मारोती भारतराव

67. रेणु के कथा साहित्य में यथार्थवाद 388
डॉ. संतोष सुभाषराव कुलकर्णी

68. रेणु जी का कथा साहित्य और जाति 393
डॉ. मोहन शिंदे

69. फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में सर्वहारा वर्ग का जीवन 397
प्रा. अमोल ज्ञानोबा लांडगे

70. कथाकार रेणु और आँचलिक भाव 401
डॉ. सुब्राव नामदेव जाधव

71. फणीश्वर नाथ रेणु का साहित्य और हाशिये का समाज 407
डॉ संतोष महीपति

72. फणीश्वर नाथ रेणु के साहित्य में सामाजिक यथार्थ 413
डॉ. दीपा रागा

फणीश्वरनाथ रेणु की रचनाओं में सर्वहारा वर्ग का जीवन

प्रा. अमोल ज्ञानोबा लांडगे

भारतवर्ष में स्वाधीनता के पश्चात भी समाज में भय एवं आतंक की स्थितियाँ निर्माण हुई हैद्य भ्रष्ट्र प्रशासन व्यवस्था एवं सत्ता लोलुपता से भरे राज़नीतिक दल एवं नेता अनुशासनहीनता, जातिवाद और पदों का दुरुपयोग कर राजनैतिक मूल्यों को पतन की ओर ले जा रहे हैद्य राजनीति सिर्फ अवसर वादियों के हाथ की कठपुतली बन गयी है। समाज में मनुष्य के बीच की दूरी बढ गयी है। सामान्य सर्वहारा वर्ग के जीवन में तनाव निर्माण हुआ है। स्वाधीनता के लिए जिन्होने अपने प्राणों का बलिदान दिया स्वाधीनता का उनका जो लक्ष्य था वह लक्ष्य कहीं न कहीं भटक गयाद्य स्वार्थपरता, झूठ, विश्वासघात ने जनम लियाद्य "यही है तुम्हारी आजादी यही है तुम्हारे समाजवादी समाज की रुप रेखा?... सच्चाई नामक गुण मनुष्य के हृदय से धीरे-धीरे लोप हो रहा है।"[1] देशभक्तों एवं स्वतंत्रता सेनानियों ने आजाद भारत के लिए न्याय और जनहित प्रशासन की कल्पना की थी वह सिर्फ कल्पना ही बन कर रह गयी। आज हमारे देश के निम्नहारा वर्ग ने कमजोरी के बावजुद समझौताभरा जीवन अपनया है। आर्थिक बदहाली में भी एक प्रकार से संतोष का जीवन यापन करने के लिए परिस्थितियों सें समझौता हो गया है।

"जिस देश का वर्तमान में भौतिक जीवन नष्ट हो चुका हो और जिसका भविष्य भौतिक दृष्टि से अंधकारमय लगता हो उसने भौतिक जीवन के पराभव और हीनता का सामना करने के लिए ऐसे जीवन दर्शन की रचना की, जिसमें आत्मिक जीवन को शारीरिक जीवन से, मानसिक विकास को भौतिक विकास

से और अंतर्जगत को बर्हिजगत से श्रेष्ठ माना गयाद्य साथ ही ऐसे विश्वास का पोषण किया गया कि यदि पश्चिम देश भौतिक रूप से महान है तो पूर्व के देश विशेषकर भारत मानसिक, नैतिक और अध्यात्मिक दृष्टि से महान है, यह ऐसी धारणा है जो भारतियों की सबसे सशक्त मानसिक बेडी हैद्य यह उन्हे सामाजिक रुप से जीवन संघर्ष में आज भी पंगुं एवं अयोग्य बनाए हुए है।"[2]

समाज में विभिन्न जाति एवं वर्गो में विभक्त लोग जो एक प्रयास कर रहे थे वे असफल हुए थे। लोग स्वतंत्रता में भी गुलामी का जीवन यापन कर रहे थेद्य अपने आप को जाने-अनजाने में अध्यात्म की आढ में सुरक्षित महसुस कर रहे थे। "निरबल के बल राम हो सन्तो, निरबल के बलराम"[3] सर्वहारा वर्ग खुद का अस्तित्व बचाने के लिए स्वयं को प्रेरित कर रहा थाद्य रेणु के रचनाओं में चित्रित सर्वहारा वर्ग के पास भी एक सांस्कृतिक, धार्मिक धरोहर है जो उन्हे जीवंतता प्रदान करती हैद्य किंतु वह भी इस स्थिति से बाहर आने का भरसक प्रयास करते हैद्य 'मैला आँचल' में 'कालीचरण' की भूमिका इसी को उजागर करती हैद्य सर्वहारा वर्ग की अनिवार्य आवश्यकताएँ आवास, वस्त्र, भोजन में भोजन का चित्रण प्रखर रुप से देखने को मिलता है और रेणुजी ने इसको यथोचित प्रस्तुत किया हैद्य "तंत्रिमा, गहलोत और पोलियाटोली के अधिकांश लोगों ने कभी पूरी-जलेबी चखी भी नहीं है।"[4]

पुरी-जलेबी तो दूर दो समय के रोटी तक के लिए संघर्ष है। पेट भरने के लिए अनिश्चितता बनी है। केवल पेट भरना ही मुख्य लक्ष्य है। रेणु जी मैला आँचल में लिखते है "डॉक्टर यहाँ की गरीबी और बेबसी को देखकर आश्चर्य चकित होता हैद्य वह संतोष कितना महान है जिसके सहारे यह वर्ग जी रहा है? आखिर वह कौन सा कठोर विधान है जिससे हजारों-हजार क्षुधितों को अनुशासन में बाँध रखा है?"[5] सर्वहारा वर्ग दोनों ओर से पिडा से ग्रासित है। एक ओर प्राकृतिक आपदाओं से गरिब जूझ रहा है तो दूसरी ओर मानव निर्मित चुनौतियों से संघर्ष कर रहा है। सुखा, बाढ के साथ सामाजिक और राजनैतिक प्रपंचों से लडना पड रहा है। सर्वहारा वर्ग का अस्तित्व खतरे आ गया है। ऐसा चित्र वर्णित किया गया है। "खेतों में फैली काली मिठ्ठी की संजीवनी इन्हें जिलाए रखती हैद्य शस्य श्यामला, सुजला-सुफला इनकी माँ नहीं? अब तो शायद धरती पर पैर रखने के तरिके गढ लिए जाते हैद्य सुई के छेद से हाथी निकाल देने की बुद्धि ही आज सही बुद्धि है, लोग बकवास करते है बद्धि विभ्रम रोग से पीडित है।"[6] रेणु के साहित्य में उदासी में भी निरंतर वर्तमान प्राणशक्ति की भावना दिखाई देती है।

मनुष्य के भीतर की बची हुई आस्था और जिजीविषा रेणु के साहित्य में देखने को मिलती हैद्य विपरित परिस्थितियाँ होने के बावजूद भी जीवन की धडकन सुनाई देती है। समस्या के सामने घूटने टेकने के बजाय जूझने की प्रेरणा लिए हुए है।

भारत वर्ष में निम्न वर्ग के सामाजिक सुधार की अपेक्षा पूरी नहीं हो पायी है। कमजोरी में भी लडने के बावजूद असफलता है। असहाय जनमानस को सामाजिक एवं राजनैतिक सहायता की आवश्यकता है। "एक न्यायपूर्ण शासन सब कुछ बदल सकता है और जबतक न्यायपूर्वक इन उपेक्षित वर्गों का उत्थान नहीं हो सकता तब तक हमारी स्वतंत्रता आधूरी है।"[7] रेणु अपने रिपोर्ताज 'विदापद' में बिकटा के जुबानी कह रहे हैद्य "बाप रे मेरी कौन दुर्गति नहीं हुई सात वर्षें तक में सूद चुकाता रहा तब भी कर्ज से मुक्त नहीं हुआ कोल्हु के बैल की तरह दिन-रात मेहनत की पर कर्ज बढता ही गया।"[8] रेणु जी के साहित्य में दमघोटू स्थितियाँ है लेकिन इन स्थितियों से जूझने की प्रेरणा चरित्र में देखने को मिलती है। यह सत्यता और यथार्थता समकालीन रचनाकारों में से रेणुजी को अलग करती है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में भी सर्वहारा वर्ग की स्थितियाँ अच्छी नहीं है। आधारभूत सुविधाओं का आभाव है। अच्छे वस्त्र, निवारा, भोजन प्राप्य नहीं है। अधिकांश लोग भूमिहिन है। गाँव छोडकर शहर की ओर पलायन बढ रहा है। एक सामाजिक और राजनैतिक सहारे की आवश्यकता है। इसीलिए रेणू जी अपने साहित्य में समाज को मानवीय बनाने का प्रयास करते दिखाई देते है। एक मानवतावादी समाज में किसी प्रकार के जातिवाद या नारीवाद की आवश्यकता नहीं होंगी। उन्होंने मानवतावादी समाज निर्माण पर बल दिया है। राजनीति के प्रति रेणुजी ने आलोचनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त की है। किसानों के आर्थिक दशा का चित्रण बिना किसी सजावट के प्रस्तुत हुआ है तथा सर्वहारा, हताश, कुण्ठित, शोषित और गरीबी की दयनीयता को चित्रित किया है।

संदर्भ संकेत

1. दीर्घतपा–फ. रेणु - पृष्ठ सं. 140
2. परिवर्तन एवं विकास - पूरन चंद्र जोशी, पृष्ठ सं. 42
3. मैला आँचल–फ. रेणु, पृष्ठ सं. 351

4. मैला आँचल–फ. रेणु, पृष्ठ सं. 40
5. मैला आँचल–फ. रेणु, पृष्ठ सं. 180
6. मैला आँचल–फ. रेणु पृष्ठ सं. 181
7. साक्षात्कार–देवेंद्रप्रसाद, (रेणु निवासी)
8. विदापद–फ. रेणु पृष्ठ सं.25

आधार ग्रंथ सूची

1. चुनी हुई रचनाएँ–रेणु. संपा. - वाणी प्रकाशन दिल्ली
2. रेणु रचनावली - भारत यायावर, राजकमल प्रकाशन दिल्ली
3. मैला आँचल–फ. रेणु - राजकमल प्रकाशन दिल्ली
4. दीर्घतपा - फ. रेणु - राजकमल प्रकाशन दिल्ली
5. प्रतिनिधि कहानियाँ - फ. रेणु - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली